अक्षरों का विद्रोह

रामदेव आचार्य

प्राक्कथन
बालकृष्ण राव

कृती प्रकाशन
कुचीलपुरा, बीकानेर
(राजस्थान)

अक्षरों का विद्रोह

•

प्राक्कथन

•

ठीक सैंतीस वर्ष हुए जब एक दिन मेरे प्रथम कविता सकलन "कौमुदी" का प्राक्कथन डाक से आया था। मैंने बडे उत्साह से लिफाफा खोला और पढना शुरु करने से पहले, प्राक्कथन का आकार देखकर इसका अदाज करने की कोशिश की कि उसके लिए कितने पृष्ठो की आवश्यकता पडेगी। पुस्तक छप चुकी थी, केवल वही एक फर्मा शेष था जिसमे प्राक्कथन को होना था। पडित श्याम बिहारी मिश्र प्राक्कथन लिखना स्वीकार चुके थे, उन्हे डरते-डरते दो स्मरण पत्र भेज चुका था, और अत मे विवश होकर, खीझकर, एक फर्मा रोककर शेष पुस्तक छपा डाली थी। जो फर्मा रोका था उसमे भी कुछ पृष्ठ अन्य उपयोगार्थ आरक्षित थे, अदाज से कुछ पृष्ठ प्राक्कथन के लिए छोडे थे। भाग्य से प्राक्कथन उस छूटी हुई जगह से कुछ कम मे ही आ गया, इस कारण कुशल हुई। बढ जाता तो मुश्किल होती।

नही जानता इस प्राक्कथन की स्थिति क्या है। जैसे मैंने सैंतीस वर्ष पूर्व रावराजा रायबहादुर पडित श्यामबिहारी जी मिश्र के प्राक्कथन की प्रतीक्षा की थी वैसे ही रामदेव जी भी कर रहे होगे। मैंने अपनी पुस्तक छपा डाली थी, केवल एक फर्मा रोक रखा था। उन्होने भी अपनी पुस्तक छपा डाली है और शायद एक फर्मा रोक रखा है। आशा करता हू कि जैसे पडित श्यामबिहारी जी मिश्र के प्राक्कथन को उपलब्ध पृष्ठो मे खपाने म मुझे कोई दिक्कत नही हुई वैसे ही रामदेव जी को भी न होगी। अस्तु।

पर यह साम्य यहीं तक है। अपनी पुस्तक का प्राक्कथन लिखने के लिए मैंने पडित श्यामबिहारी मिश्र को नही चुना था, न

लिखने के लिए उनसे निवेदन करने वाला ही मैं था। मिश्र जी मेरे पिताजी के मित्र थे उनके अनुरोध पर उन्होंने लिखना स्वीकार किया। यहा बात बिल्कुल भिन्न है। अत जैसे अपनी जगह रामदवजी प्राक्कथन लेखक के रूप म मुझे चुनने के लिए उत्तरदायी है—भले ही सिर्फ अपने प्रति उत्तरदायी हों—वैसे ही उनका अनुरोध मानने का दायित्व मुझ पर है। म यह कहकर छुट्टी नही पा सकता कि 'मेरे मित्र का अनुरोध था, टाल कैसे सकता था?" यह तो एक ऐसे व्यक्ति का अनुरोध था जिसे मैंने देखा तक नही था, जिससे मेरा परिचय केवल पत्रो, लेखो और कविताओ तक ही सीमित था। यही नही, प्राक्कथन लिखना स्वीकारते समय मैं यह भी नहीं कह सकता था कि मैंने उनकी लिखी इतनी कविताए पढली हैं कि विश्वासपूर्वक उनके सम्बध म कुछ कह सकता हू। इतना भी नही था। तब तक तो बहुत थोडी सी रचनाए ही देखी थी, विश्वासपूर्वक कुछ भी कह सकने की स्थिति म नही था। फिर भी मने रामदव जी का अनुरोध स्वीकार किया, तुरत पहला पत्र पाते ही, आसानी से स्वीकार कर लिया। क्या?

यह एक स्वाभाविक ही नही, आवश्यक प्रश्न है, क्योंकि प्राक्कथन लेखक प्रथम आलोचक की स्थिति मे होता है, उसे अपने दायित्व के बोध का प्रमाण देना ही चाहिए। से तीस वर्ष पहले शायद इस "क्यों' के उत्तर म यह कहना ही काफी होता कि 'भाई क्या करता? बेचारे ने इतना इसरार भरा पत्र लिखा था कि इनकार नहीं कर सका' मगर आज यह कहना बेमानी होगा। इसलिए मैं खुद अपने से यह सवाल पूछता हू कि मैंने इतने स्वल्प परिचय के आधार पर प्राक्कथन लिखना क्यो मजूर किया? रामदव जी की जितनी भी कविताए मैंने तबतक देखी थी उनसे आकर्षित हुआ था या आश्वस्त था केवल भविष्य की सभावनाओ के विषय म आशावान? इस रूप म इस प्रश्न का उत्तर देने की प्रक्रिया ही इस सग्रह का प्राक्कथन बन जाय, यही इस प्रश्न की भी सार्थकता होगी और इस प्राक्कथन की भी।

रामदव जी की कविताओ ने अपनी ओर मेरा ध्यान खीचा था। ध्यान केवल सौन्दर्य ही अपनी ओर खीच सकता हो ऐसी बात

नही है । बहुधा हम उसकी ओर भी बरबस आकृष्ट हो जाते है जो सर्वथा असुदर है अप्रीतिकर है। ध्यान आकर्षित करने वाला गुण या तत्त्व वास्तव मे विलक्षणता या असाधारणता है। इसी कारण हमारी दृष्टि अत्यत सुदर की ओर भी जाती है और अत्यत असुदर की ओर भी--भले ही हम अत्यत सुदर को बार बार देखने की कोशिश करें और अत्यत असुदर की ओर से आखें जबदस्ती हटालें। दोनो की समानता दोनो की असामान्यता म है, इसी कारण दोनो आकर्षित करते हैं। रामदेव जी की कविता म मुझे आकर्षित करने वाला तत्त्व मिला, और वह तत्त्व या गुण उसकी असाधारण साधारणता मे झलकता था। आज कविता मे ऐसी सहजता, साधारणता अकृत्रिमता अलभ्य है। चाहे वह हमारा आभिजात्य का मोह हो, चाहे सहसा अप्रत्याशित आचरण से चौंकाकर आकृष्ट करने का लोभ हो चाहे जो भी कारण हो हम कृत्रिमता और अलकरण की परपरागत अवधारणाओ के विरुद्ध विद्रोह का झडा ऊचा करके, अपनी अनलकृत ही अनावृत भाषा और शैली की दुहाई देते हैं पर स्वय एक नयी कृत्रिमता के जनक और पोषक हो गये है। हमारी कविता रौंदी हुई राहो को छोडकर नयी नयी राहे ढूढने निकालने के प्रयास मे यही भुला बैठी है कि राह ढूढने के लिए ही नही होती, उस पर चला भी जाता है, चलकर आगे बढा भी जाता है, कही पहुचा भी जाता है। भीड छोडकर एकात की तलाश म, अकेलेपन की खोज म, भागने वाले बहुत हो गये हर गोशे मे तनहाई तलाशने वालो का हुजूम इकट्ठा हो गया। नतीजा यह हुआ कि जिन्हे अपने अकेलेपन का सबसे ज्यादा एहसास है उनके साथ बहुत बडी भीड है, अकेले व है जो न अकेलेपन के हामी हैं न मद्दाह, अकेलेपन का जो या तो एहसास ही नही करते या यह मानते हैं कि इस क्षण व भले ही अकेले हो लेकिन यह स्थिति क्षणिक है वे भीड के हैं भीड के ही रहेगे, आज नही तो कल कल नही तो परसो, भीड उन्हे और वे भीड को फिर पा जायेंगे। यही उनकी नियति है, यही अस्तित्व की सार्थकता है।

रामदेव आचार्य इन्ही लोगो म हैं। इन्हे भीड से डर नही लगता, अपनी विशिष्टता का गर्व दन की आशका से व्याकुल नही हैं,

भीड में खो जाने के भय से रात भर जागते नही रहने । विशिष्टता के आग्रह और अनूठेपन के लोभ मे अकेलेपन का वरण करने की तथाकथित आधुनिक प्रवृत्ति इनकी रचनाओ म परिलक्षित नही होती । इसी कारण इनकी रचना साधारणता का वरण करती है, अत असाधारण हो जाती है । इनका विद्रोह साधारण का विद्रोह है, असाधारण के आतक के विरुद्ध । इनकी कविता परिवेश म व्याप्त कृत्रिमता की घुटन के विरुद्ध सवेदनशील व्यक्ति की सहज प्रतिक्रिया है । यह विद्रोह निलक्ष्य, निरुद्देश्य विद्रोह नही है, सकारण है, अत सायक है साधार है, अत सबल है। इस असाधारणता की अपनी सीमाएहैं जिनका वह अतिक्रमण नही कर पाती । रामदेव आचायके काव्यकी सीमाए हैं । भापा या यो कह शैली, की स्वच्छता यदि इस साधारणता की शक्ति है तो व्यजकता की कमी इसकी सीमा है । कृत्रिमता का अभाव यदि गुण है तो दूसरी ओर बिल्कुल ही सपाट अभिधात्मक शैली दोप है । रामदेव आचाय की कविता म, उनके कथ्य म और उनके शिल्प म, नितात स्वच्छ, सहज साधारणता अपने समस्त गुण दोपो के साथ परिलक्षित होती है । यदि एक ओर "नये वप पर" जसी कविता है जिसकी भापा अनुभूति की आत्यतिकता से अनायास ही व्यजक हो उठी है कथ्य और शिल्प एक दूसरे के पर्याय और पूरक हो गये हैं, वैयक्तिक और क्षणिक सावजनीन और सावकालिक हो गया है, तो दूसरी ओर वे रचनाए हैं जो केवल कुछ कहती भर हैं, अनुभव नही कराती । कवित्व से अधिक ऐसी कविताए वक्तृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं । सग्रह म ऐसी एक से अधिक रचनाए है पर उनके नामो की सूची न दू गा । हप की बात यह है कि इन रचनाओ मे भी जिनमे कवित्व कम वक्तृत्व अधिक मिलता है कवि का शब्दानुशासन असदिग्ध रहता है । भापा के प्रति सतर्कता कवि के दायित्व बोध का प्रमाण हैं । रामदेव आचाय इस कसौटी पर खरे उनरते हैं । व कही भी न धोखा खाते नजर आते हैं न धोखा देने की कोशिश करते । जिन रचनाओ मे कवित्व की जगह वक्तृत्व का ससपश मिलता है उनमे भी कभी यह नही लगता कि कवि ने केवल प्रभावित अथवा अभिभूत करने के लिए शब्दो का प्रयोग किया है । इस सयम के पीछे भापा और भावक के प्रति जो आदर परिलक्षित

होता है वह कवि की निर्भ्रांत दृष्टि का प्रमाण और परिणाम ही है। उसकी दृष्टि किसी प्रकार के रूमानी मायाजाल म फसती भटकती नहीं, अपने 'स्व' को, अपने परिवेश को, यथाथ को पहचानती है और जैसा पाती है वैसा ही स्वीकारती है। न यथाथ की कमियो और बुराइयो पर पर्दा डालने की कोशिश करती है, न काल्पनिक सौंदय सष्टि को आदश का मानचित्र समभने की भूल करती है। वह अनाविल है और स्वस्थ, सुस्पष्ट है, क्योंकि उसने नि सकोच अपनी सहजता, साधारणता का वरण किया है। वड स्वथ की यह सीख मानो रामदेव आचाय न आदश वाक्य के रूप म ग्रहण कर ली है

इफ दाउ इहीड डिराइव दाइ लाइट फ्रॉम हेवन,
देन टु द मेजर ग्राफ दैट हेवनबॉन लाइट,
शाइन पोएट, इन दाइ प्लेस — ऍंड बी कटेंट।

अपने कवि कम से, कवि के रूप मे अपनी स्थिति और नियति से, रामदेव आचाय 'कटेंट' हैं, भले ही परिवेश मे व्याप्त अशिवता के विरुद्ध उनका भावुक मन विद्रोही हो गया हो।

रामदेव आचाय का स्वर एक आस्थावान, आदशवादी का है जो दुनिया को रहने योग्य और जि दगी को जीने योग्य मानता है। वतमान को अतीत से बडा मानता है क्योंकि उसका विश्वास है कि भविष्य वतमानसे बडा होगा, होना चाहिए। यदि हम आगे बढ रहे हैं तो निश्चय है आज जहा हैं कल वहा से बहुत पीछे थे, और कल बहुत आगे होंगे। इस आस्था के साथ आज की चारों ओर सुन पडने वाले निराशा, सत्रास और पराजय के हाहाकार की सगति नही बैठती। कवि को यह ज्ञात है पर वह अकेलापन महसूस नही करता क्योंकि वह जानता है कि अतत हाहाकार करने वाला निराशावादी भी उसके साथ ही होगा, क्योंकि वह भी मनुष्य है, साधारण मनुष्य है, और मनुष्य की साधारणता ही उसकी अजेय आशावादिता है। कवि की दृष्टि परिवेश की ऊपरी सतहो तक ही जाती हो, वह केवल दु ख और दै य ही देख पाता हो, पर वह जो कुछ देखता है वह गहराई से दखता है। गहराई से देखने के लिए पर्तें उखाडना

जरूरी नहीं है। गहराई की अपेक्षा देखने की प्रक्रिया से नहीं देखने वाली दृष्टि से होती है।

कवि की व्यंग्यात्मक कविताओं से मुझे संतोष नहीं हुआ, हल्की लगी। कहीं कहीं विद्रोह का स्वर भी इतना दबा हुआ लगा कि कविता विद्रोह की जगह केवल विरोध की लगी। कुछ शब्द खटके, जैसे 'ईमानदार' और 'ईमानदारी'। सचमुच जो ईमानदार है उसे इसका एहसास हो क्यों कि वह ईमानदारी से बात कह रहा है? बात कह रहा है, इतना ही काफी है, ईमानदारी से तो होगी ही। एक खटकने वाला शब्द और उल्लेखनीय है 'विद्रूपता'। (भला इसका क्या अर्थ हुआ ?)

पर जो नया कवि हमें 'नये वर्ष पर' 'वह संध्या' 'समय की गतिशीलता' 'एक ईमानदार प्रणय गीत' और 'चांदनी रात में गांव' जैसी उत्कृष्ट कविताएं दे सकता है उसकी 'विद्रूपताएं' (इसका अर्थ जो भी हो) ध्यान आकृष्ट नहीं कर सकती। जिस कलम से ये पंक्तियां निकलीं

> पत्तों से टकराकर लड़खड़ाती
> शराबी हवा,
> व्यापक क्षेत्र में
> समाधि लगाये विचार-मग्न प्रकृति,
> यदा-कदा टूटता तारा
> और वातावरण की गुमसुम चुप्पी,
> और मेरे मन पर
> बनते बिगड़ते
> अनेक तैल चित्र !

उससे हिन्दी को बहुत-कुछ आशा, अपेक्षा करने का अधिकार है।

'अमरावती'
१५ टगोरनगर
इलाहाबाद
२७ ३ १९६८

[signature]

अनुक्रम

उजागर क्षणों की कविताएं

लम्बी कविताए

उजागर क्षणो की कविताएं

अक्षरो का विद्रोह

•

अक्षरो ने मुझसे कहा—
हमे गलत साचो मे फिट मत करो।

शब्दो ने मुझसे कहा—
हमे उधार लिए फ्रेमो मे मत जडो।

ध्वनियो ने मुझसे कहा—
हमारा सगीत मत छीनो।

अर्थो ने मुझसे कहा—
हमे नगा मत करो।

गीतो ने मुझसे कहा—
हमारी राग मत लूटो।

लय ने मुझसे कहा—
मेरी गति मत तोडो।

कविता ने मुझसे कहा—
मेरा दद मत छीनो।

सवेदना ने मुझसे कहा—
मेरा क्रय-विक्रय मत करो।

अत मे उन सबने मिलकर
एक विचार गोष्ठी की,
और एक स्वर मे
मेरी—
कवि की—
सत्ता के विरुद्ध
विद्रोह कर दिया।

•

दो प्रतिक्रियाए

०

सडक के किनारे खडे
सूखी देहवाले
उस भिखारी बालक ने
मिमियाते हुए
पैसे माँगने के लिए
मेरे सामने जब हाथ फैलाया
तो मुझ पर एक साथ
दो प्रतिक्रियाए हुई—

एक

मिमियाता हुआ वह भिखारी बालक
मुझे अपना बच्चा लगा।
मेरा बच्चा भिखारी हो गया है!

दो

सूखी देहवाला वह भिखारी बालक
मुझे सिमटा हुआ
एक प्रश्न-चिह्न लगा,
और मेरी इच्छा हुई
कि बिठा दू इस प्रश्न चिह्न को
योजनाओ के आकडो पर,
समृद्धि के नक्शो पर,
नेताओ के ओजस्वी भाषणो पर,
तथा
संसद और विधान-सभाओ पर!

●

प्रजातन्त्र का गीत

•

एक स्वस्थ व सुन्दर घोडे पर
आसन जमाये
जब एक कुरूप गधे ने
घोडे पर चाबुक चलायी
तो घोडा तिलमिला उठा।

बोला--
ओ रे मलाहारी गर्दभराज!
क्या खूब तुम्हारे भाग्य
कि हम पर तुम असवार!

घोडे की गरदन पर
पान की पीक थूकते हुए
गधे ने जवाब दिया—

ओ रे भोदू जीव!
यह नही भाग्य का दान,
यह है प्रजातत्र का गान—
कि घोडे ढोये बोझ
औ' गधे चबाये पान!

•

मसीहा

•

मसीहा होते हैं वे
जो खुद को मसीहा कहते नहीं,
समझते हैं।

उन्हें मसीहा कहने के लिए
उनके साथ एक जत्था चलता है,
जत्थे के सभी लोग

स्वार्थी,
कमीने
या मूर्ख होते हैं।

मसीहा देते हैं उपदेश
तो लोग ऊंघते हैं,
पर जत्थेवाले कहते हैं
कि लोग झूमते हैं।

न-कुछ विषय पर
मसीहा घंटों बोलते हैं
भारी-भारी परिभाषाओं के
खाते खोलते हैं।

नहीं समझ पाते साधारण लोग
जत्थेवाले समझाते हैं,
(कन्फ्यूज्ड) मसीहाओं का समझ पाना
टेढ़ी खीर बताते हैं।

मसीहा के विचारों को
नयी नयी शैलियों में ढालते हैं,
जो स्वयं मसीहा नहीं समझ पाये
ऐसे ऐसे गूढ़ अर्थों पर
जत्थेवाले प्रकाश डालते हैं।

सुना है आदि-काल से
सभी मसीहा जत्थे पालते हैं,
जत्थेवालो के पेट मे अनाज
और लोगो की आँखो मे
धूल डालते है।

•

आदमी

•

मैं कोई वाहन तो नहीं हूँ
कि जब चाहो तब सवारी कर लो,
मैं कोई चादर तो नहीं हूँ
कि जब चाहो तब बिछा लो
जब चाहा तब ओढ़ लो,
मैं कोई कपड़े का थान तो नहीं हूँ
कि मर्जी आये जिस साइज में काटकर
बौने या लम्बे मूर्खों के लिए
मेरा कोट बना दो,

मैं कुछ और हूँ
मैं आदमी हूँ।

•

पीडा वैयक्तिक

•

तुम्हे मैं बीमार लगता हू
तो ठीक ही तो है
पर तुम क्यो जानना चाहते हो
मेरे सन्दर्भो का इतिहास ?

मेरी वेदना कोई पेम्फलेट तो नही है
कि बाट दू
हर सडक पर, चौराहे पर ।
मेरा दद कोई पोस्टर तो नही है
कि चिपका दू
हर मोड पर, दीवार पर ।

बस तुम अपने स्वास्थ्य को जियो,
और मुझे मेरी बीमारी को जीने दो ।

•

एक ईमानदार कविता

•

मेरे लिए नारी सीता नही,
मुझे नही लेनी उसकी अग्नि-परीक्षा !

मेरे लिए नारी द्रौपदी नही,
मुझे नही करना उसे भरी महफिल मे नगा !

मैं नही कहता उसे देवी या पतिव्रता,
मुझे नही बनाना उसे मार मार कर सती !

यह सब तो
मै धर्म-ग्रन्थो के लिए छोडता हूँ ।

मेरे लिए नारी केवल प्रेमिका है,
जिसका सारा जिस्म
मेरे सारे जिस्म मे उतर आता है ।

•

एक ईमानदार प्रणय-गीत

•

यहा आओ
और रख दो मेरे होठो पर
अपने दहकते गुलाब,
भर दो मेरी बाहो मे
अपनी देह के अगारे,
धधका दो मेरी धमनियो मे
ज्वालामुखी लपटे,
मेरी नस-नस मे डाल दो तेज़ाब,
अपनी जुल्फो से कहो--
मुझे डस ले सौ बार,
आज की रात तो
हो जाने दो मेरी मौत,
बनने दो चाद को
इस हसीन मौत का गवाह,

मेरे ख़ून को ख़ून की प्यास है,
मेरी देह को देह की भूख है !

•

यदि कविता पास नही होती

•

यदि कविता पास नही होती
तो जन्म अधूरा रह जाता ।

पीडा अनगायी रह जाती,
टूटन अनब्याही रह जाती,
चित्रो मे रग नही भरता,
सपनो को सत्य नही मिलता ।

अागढ रह जाती अभिलाषा,
अनपढ रहता मन का चिन्तन,
हर विरह अबोला मर जाता,
लय-हीन पडी रहती धडकन।

बिन पाये अर्थ अश्रु, दृग का
माटी मे ढल कर बह जाता ।

तन का, मन का यह बोझिल श्रम
बोझिल का बोझिल रह जाता,
यह घुटा-घुटा अस्तित्व नही
अपना सवेदन कह पाता ।

हर मिलन मूक ही मर जाता,
हर प्रणय अगाया रह जाता,
माध्यम बिन मजिल रह जाती,
हर गीत अजाया रह जाता ।

जीवित रहने की मजबूरी
कैसे यह जीवन सह पाता ?

•

प्रोफेसर

•

दूसरो के दिमागो मे
ढले हुए हमारे दिमाग
ढालते रहते हैं दूसरे दिमागो को
अपने साचो मे ।

दिमाग ढालने की हम मशीने ।

हमारे रग बिरगे उपदेश
बन जाते चद सिक्के,
लद जाते हमारी बौद्धिक देह (!) पर
सूट और बूट,
हमारी योग्यता के
बाहरी प्रतीक,
हाथी के दात ।

एक-दूसरे से
बडा कहलाने की होड मे
लगाते हैं हम दाव पच,
उछालते हे कीचड,
दिखाते है कलाबाजिया
मदारी के रीछ सी ।

बौद्धिकता के हम मातण्ड (!)
कैद रहते
अर्थहीन ईर्ष्याओ की
अध गुफाओ मे ।
हमारे द्वारा ढाले गये दिमागो से
कतराता हमारा ईमान,

दो सपाट कविताए

१ दृष्टि-भेद

•

वहुत अधिक
बोलनेवालो की सभा मे
एक व्यक्ति
बिलकुल मौन बैठा था।
सभा समाप्त होने पर
सबमे अधिक बोलनेवाले व्यक्ति ने
मौन व्यक्ति से पूछा—
"तुम बिलकुल नही बोलते,
क्या तुम गूगे हो ?"

मौन व्यक्ति ने
पहली बार जुबान खोली—
"सभी मूर्ख
मुझे गूगा समझते है।"

•

२ विवशता

•

सोचा था यह
कि साथी है वे
सो हमे निभा ही लेगे,

पर हुआ यह
कि साथी थे वे,
इसलिए हमे ही उनको निभाना पडा !

•

समय की अनुभूतियां

•

१ समय की स्तब्धता

सोयी हुई उद्यान औरत की तरह
सोया हुआ यह समय !
एक मौन लम्बी
जाम हुई ट्रक-ट्रेन की तरह
जाम हुआ यह समय !
काश मैं इसे समेट सकूँ !
मैं इसे फेंक सकूँ !

हिमालय पर जमी बर्फ सा
जमा हुआ यह समय !
आकाश की तरह
स्थिर और अनंत यह समय !
काश, मैं इसे पिघला सकूँ !
मैं इसे हिला सकूँ !

•

२ समय की गतिशीलता

किसी अंतरिक्ष यान की तरह
भागता हुआ यह समय !
किसी सुपरसोनिक जेट की तरह
धुएँ की लकीरें छोड़ता हुआ यह समय !
काश, मैं इसके पख पकड़ पाता !
मैं इसके मशीनी शिकंजों को जकड़ पाता !

अतृप्त प्रतिध्वनियां पुकारती हैं,

तीन समानताए

•

जैसे कोई तेज स्पीड मे भागती हुई मोटर,
जैसे ऐसी मोटर के पहियो मे
फसकर कुचला गया कबूतर,
जैसे कबूतर के लोथडे पर
अपनी समझदार गरदन उठाये
बुभुक्षित कौए—

वैसी ही यह आधुनिकता !
वैसा ही यह परिवेश !!
वैसे ही ये सभ्य लोग !!!

•

तीन समानताए

•

जैसे कोई तेज स्पीड मे भागती हुई मोटर,
जैसे ऐसी मोटर के पहियो मे
फसकर कुचला गया कबूतर,
जैसे कबूतर के लोथडे पर
अपनी समझदार गरदन उठाये
बुभुक्षित कौए—

वैसी ही यह आधुनिकता!
वैसा ही यह परिवेश!!
वैसे ही ये सभ्य लोग!!!

•

गौ-भक्त के आमरण अनशन पर

•

गाय के नाम पर
आत्माहुति देने वाले ओ शहीद !
मुझे तुम पर गुस्सा नही,
तरस आता है,
यह सोचकर कि आज भी आदमी
आदमी को छोडकर
पशु-रक्षा के गीत गाता है,
अपनी बलि चढाता है !

तेरी मौत से मुझे कोई सहानुभूति नही,
क्योंकि तेरी मौत मेरी मौत नही,
रूढि की मौत है,
प्रतिक्रिया की मौत है,
सस्कार की मौत है।

तेरी मौत पर फिर भी
मुझे दया आती है,
मेरी आत्मा तिलमिलाती है,
क्योंकि तुम आदमी हो
और हर आदमी की मौत
हर आदमी की मौत
के समान होती है।

दद होता है यह जानकर
कि आदमी को मरने की छूट है,
कि आत्म-हत्या करने की छूट है !

देश मे प्रजातत्र है,
इसलिए जीने मरने को व्यक्ति स्वतत्र है।

•

मैं हू भीड का एक स्वर !

मै हू भीड का एक स्वर,
मैं हू नदी की लघु बूद,
मै नभ-गगा का एक दीप !

मुझे समूह से मत छीनो।
मुझे प्रवाह से मत काटो।
मुझे आकाश से मत समेटो।

सम्मान दो उन्हे,
जो भीड से वडे ह,
जो भीड को भेड कहते ह।

प्रतिष्ठा दो उन्हे
जो सिंहासनो से चिपके ह,
जिन्हे सिंहासनो से बेहद इश्क हे।

प्रशस्तिया उनको करो अर्पित,
जिन पर 'विशिष्ट' होने का बोझ है,
जो छाती तानकर वोझ ढोते है।

मेरी लघु इकाई को
हथकडियो से मुक्त रहने दो।
मुझमे मेरा छोटापन मत छीनो।
मुझे बस वही रहने दो
जहा मैं हूँ—
मैं हू भीड का एक स्वर,
मैं हूँ नदी की लघु बूद,
मै नभ गगा का एक दीप !

मैं हू भीड का एक स्वर !

मै हू भीड का एक स्वर,
मैं हू नदी की लघु बून्द,
मै नभ-गगा का एक दीप !

मुझे समूह स मत छीनो।
मुझे प्रवाह से मत काटो।
मुझे आकाश से मत समेटो।

सम्मान दो उन्हे,
जो भीड से बडे है,
जो भीड को भेड कहते है।

प्रतिष्ठा दो उन्हे
जो सिहासनो से चिपके है,
जिन्हे सिहासनो से बेहद इश्क है।

प्रशस्तिया उनको करो अर्पित,
जिन पर 'विशिष्ट' होने का बोझ है,
जो छाती तानकर बोझ ढोते है।

मेरी लघु इकाई को
हथकडियो से मुक्त रहने दो।
मुझमे मेरा छोटापन मत छीनो।
मुझे बस वही रहने दो
जहा मैं हूँ—
मैं हू भीड का एक स्वर,
मैं हूँ नदी की लघु बून्द,
मैं नभ गगा का एक दीप !

मैं और मेरी पीडा

०

मुझमे ऐसा क्या है
कि मैं टूटता नही हू,
मै बिखरता नही हू।

चोटे सहता हू अनेक,
हर चोट खाकर तिलमिलाता हू,
घायल हो जाता हू,
पर मेरी पीडा
कभी भी आत्म हत्या की
प्रेरणा नही बनती,
मृत्यु का आनन्द नही बनती।

मैं घावो को सहला लेता हू,
मरहम-पट्टी कर लेता हू,
फिर स्वस्थ होकर
नये सिरे से
जीवन को पकडने के लिए
चल पडता हू।

फिर जब अपने चारो ओर देखता हू
तो पाता हू
कि मुझ पर पडी प्रत्येक चोट
स्वय टूट गयी है,
बिखर गयी है।

●

चक्रव्यूह

•

मेरे देशवासियो ने
केवल यथार्थो को
जीना सीखा है ।
सम्भावनाओ को जीना
वे नही जानते ।
सम्भावनाए
यथार्थों से बडी होती है ।
जिस दिन मेरे देशवासी
सम्भावनाओ को जीना सीख लेंगे–
उस दिन
जीना सीख लेंगे ।

•

मैं और मेरी पीडा

१

मुझमे ऐसा क्या है
कि मैं टूटता नही हू,
मैं बिखरता नही हू !

चोटे सहता हू अनेक,
हर चोट खाकर तिलमिलाता हू,
घायल हो जाता हू,
पर मेरी पीडा
कभी भी आत्म हत्या की
प्रेरणा नही बनती,
मृत्यु का आनद नही बनाती !

मै घावो को सहला लेता हू,
मरहम-पट्टी कर लेता हू,
फिर स्वस्थ होकर
नये सिरे से
जीवन को पकडने के लिए
चल पडता हू ।

फिर जब अपने चारो ओर देखता हू
तो पाता हू
कि मुझ पर पडी प्रत्येक चाट
स्वय टूट गयी है,
बिखर गयी है !

•

चक्रव्यूह

•

मेरे देशवासियो ने
केवल यथार्थो को
जीना सीखा हे ।
सम्भावनाम्रो को जीना
वे नही जानते ।
मम्भावनाए
यथार्थो से बडी होती ह ।
जिम दिन मेरे देशवासी
मम्भावनाम्रो को जीना सीख लेगे–
उस दिन
जीना सीख लगे ।

•

जीने का अदाज

•

मुझे वे सब बेईमान पसद हैं,
जो खुले दिल से बेईमान हैं,
जिनकी बेईमानी सीना तानकर चलती है।

मुझे उन बेईमानो से घृणा ह,
जिनकी बईमानी
एक खूबसूरत नकाब मे सजा फरेब है।

मुझे वे ईमानदार मूख लगते ह,
जिनकी ईमानदारी एक लाउड-स्पीकर ह।

वे ईमानदार कायर हे, झूठे ह,
जो ईमानदारी की सज़ा भुगतकर
रोते हैं, पछताते ह।

वे लोग वृहन्नला के वशज ह,
जो न बेईमान हैं,
न ईमानदार,
ये मध्यम-मार्गी लोग स्वार्थी है, कमीने है।

ज़िन्दगी दो ही तरीको से जी जा सकती हे–
खुली बेईमानी से
या गभीर ईमानदारी से–
दोनो को जीने का
एक निराला अदाज़ होता है।

•

एक तुक्तक

•

[सन्दर्भ अज्ञेय जी की अध्यक्षता में नव गीत, नयी-कविता गोष्ठी १६, २० तथा २१ फरवरी, १९६६ को बीकानेर में आयोजित हुई थी। उसमें पढ़े गये कुछ विद्वानों के निबंधों में इतना उलझाव तथा भटकाव था कि श्रोताओं को अनेक बार खाली हो लौटना पड़ा। अज्ञेय जी को छोड़कर शेष सभी वक्ता जटिल थे। अक्षय चन्द्र शर्मा ने "परम्परा और कवि" पर एक सफल भाषण दिया था। अन्य मुख्य वक्ताओं में श्री विद्यानिवास मिश्र, श्री सर्वेश्वरदयाल सक्सेना तथा श्री रघुवीर सहाय थे।]

यह तो समझ में आ गया क्या क्या हमारे ध्येय थे,
कुछ श्रेष्ठ पुरुषों के वचन हर आर से दुर्भेद्य थे,
'अक्षय' समझ में आ गये,
फिर मात हम तो खा गये,
अज्ञेय जी तो ज्ञेय थे, बाकी सभी अज्ञेय थे।

खेमे

•

तुम मुझे जीनियस कहो
और मैं तुम्हे मसीहा,
तुम करो मेरा अभिनन्दन
और मैं करू तुम्हारा अभिषेक।

रिश्ते निभा रही है अयोग्यताए,
खेमो मे डट रहे हैं खोखले लोग!

•

नये वर्ष पर

लो चला गया
एक और वर्ष !
रह गया मैं
वही का वही,
कुछ परिचयों को जोड़ता,
कुछ यादों को तोड़ता ।

पड़ाव की खोज में
यात्राएं शिथिल हैं,
शब्द-हीन अनुभूतियां
पीछे छूटती हैं,
मेरी एक और प्रतिमा
हर वर्ष टूटती है ।

•

कागज के जहाज

•

सपनो के सागर पर
तैरे थे मन्सूबो के जहाज !
ग्रादर्शो की भूमि पर
उभरे थे कल्पनाग्रो के राजमहल।

क्या पता था कि मेरी दुर्बलताए
मेरी विवशताए होगी,
सागर पर तैरते जहाज
कागजी होगे
तथा राजमहलो की नीवो मे
रेत भरी होगी !

जो शेष बचा है,
वह है एक विराट् शून्य,
जिसके नगे यथार्थ को
जन्मा है मेरी दीनताग्रो ने,
मेरी हीनताग्रो ने !

•

कोई गीत नही जनमा !

•

जव तक साथ रही तुम मेरे, कोई दद नही पनपा,
जव तक पास रही तुम मेरे कोई गीत नही जनमा !

गीत जनमता है पीडा की
भट्ठी मे गलकर, तपकर,
छन्द उमडते है नयनो के
मेघो मे घुल कर, ढल कर !

विरहा की विजली मे दमका
करती है मन की कविता,
सूनेपन की मुक्त पहाडी
से वहती लय की सरिता।

जव तक साथ रही तुम मेरे, कोई दद नही दहका,
कितनी ऋतुए आयी, लौटी, काई फूल नही महका।

यह एकाकीपन कितना अब
उवर वनकर लहराता,
हर वसत पन्ने रगता है,
पावस कविता कह जाता।

शिशिर सिखाता नये नये स्वर,
ग्रीष्म सौंपता है छविया,
पतझड नये अथ देता है,
मुखर स्वय होती ध्वनिया,

जव तक पास रही तुम मेरे, कोई भाव नही बहका,
कितने शब्द सुने या वाले, कोई मौन नही चहका !

•

गीत

•

मत वहने दो कजरायी पलको से ये पीडाए जर्द,
मुझे तोडने को काफी है, मेरे आसू, मेरे दर्द !

मुझे उम्र दो, एक हसी ही मेरी झोली मे डालो,
मुझे प्रभा दो, मेरे मुख की स्याही जरा पोछ डालो,
यदि आसू ढोये तो कल का सपना भी लुट जायेगा,
तुमने मुस्काना छोडा तो फिर भविष्य घुट जायेगा।

खामोशी की श्वेत पपडिया मत जमने दो मुख पर सद,
मुझे तोडने को काफी हैं मेरे आसू, मेरे दर्द।

झुकी पराजय के समीर को मत सासो मे वहने दो,
मूक-व्यथा को इन आखो मे आत्म-कथा मत कहने दो,
काजल तो आजो नयनो मे, इतना छल करना होगा,
वर्ना जीवन का मतलव ही जीते जी मरना होगा !

सूनेपन मे घिरी आस्था की झडती जाती है गर्द,
मुझे तोडने को काफी है मेरे आसू, मेरे दर्द !

•

खण्डित आदर्शों का गीत

•

[कथ्य की टूटन छन्द की टूटन मे अभिव्यक्त एक शैल्पिक प्रयोग]

जिन्दगी केवल अपाहिज है
कि जिसकी
करवटे सब मर गयी मेरे लिए,
सड गये सारे गुलाब मेरे लिए !
टूटन सभी मेरे लिए !
विघटन सभी मेरे लिए !

मैं कौन हूँ, क्या हूँ—
सभी ये प्रश्न हे भञ्झट,
अस्तित्व के सब रग
अब तो हो गये बदरग,
हो गये बजर यहा
सब खेत सपनो के,
हो गये वीरान सारे
दृष्टियो के बाग,
हौसलो को खा गयी
सम्भावनाए,

हो गयी मातम सभी
शहनाइया मेरे लिए,
रिक्तताओ म बचा
सगीत है मेरे लिए !
टूटन सभी मेरे लिए,
विघटन सभी मेरे लिए ।

मेरे चरणो की खोज
नहीं है क्षितिजो की

अपरिचित महिलाए,
जीवन की पसरी राहो पर
बस एक पेड भी नही मिला,
मिल गयी
औपचारिकता जुडी मित्रता से,
मुझको घेरा
मेरी खामोश इकाई ने,
अपने भीतर
सुनता हूँ टूटी आवाज़े,

दद अब
केवल मधुरतम गीत है मेरे लिए।
हर तरफ करती प्रतीक्षा
उदासिया मेरे लिए।
टूटन सभी मेरे लिए।
विघटन सभी मेरे लिए।

झुक रहे बोझ के
पवत ह मेरे मन पर,
हर चौराहे पर मिली मुझे
असफलताए,
मेरे गीतो को रौद दिया
मेरे अपने परिवेशो ने,
हर तरफ खोजती-फिरती
मुझको ऊब, घुटन
जीवन की रौनक
चरती रही व्यवस्थाए,
मासूम मिली आखें मुझको,
जिनमे काजल की नही रेख,
नन्हे अकुर ऐसे देखे
जिनसे सूरज ने किया वैर,

बिछ रहे हर दिशा मे
अब घुमाव है मेरे लिए ।
हो गये अधे सभी
दिन-रात है मेरे लिए ।
टूटन सभी मेरे लिए ।
विघटन सभी मेरे लिए ।

जिन्दगी केवल अपाहिज है
कि जिसकी
करवटे सब मर गयी मेरे लिए ।

●

अपने मित्रो के लिए

•

कितने वडे वडे
कालजयी योद्धा
अमोघ अस्त्र-शस्त्र लिए
मेरे चट्टानी सीने को
तोडने आये,
पर मेरे सीने से टकराकर
उनके अमोघ अस्त्र-शस्त्र
चकनाचूर हो गये
रह गया मैं अक्षत,
अक्षत, अक्षत ।

उस दिन जब प्रेम की भाषा मे
कुछ मित्रो ने
शब्दो की बौछार की
तो लगा
कि स्नेह की भाषा ने
मुझे बर्फ की चट्टान बना दिया है,
प्यार सने शब्द
सूर्य की किरणें बन गये है,
जिनके मधुर स्पर्श मे
मैं पानी पानी हो गया हू
और मेरा अस्तित्व
धीरे धीरे मिट रहा है ।

•

मेरी परछाइया !

•

अतीत एक मैली चादर है,
मैने उसे उतार फेका है ।
मैने नये परिधान पहन लिये है
और मै नयी राहो की तलाश मे
निकल गया हूँ ।

लेकिन यह क्या ?
मै स्तब्ध हूँ !
मै रोमाचित हूँ !!

अभी जब मैने
पीछे मुडकर देखा
तो पाया
कि मेरी ही परछाइयाँ
मेरा पीछा कर रही है !

•

जिन्दा मुर्दे !

●

मेरे दिमाग मे कब्रें है,
जिनमे ज़िन्दा सपने
दफ़ना दिये गये है !

हर रात को
ये ज़िन्दा मुर्दे
अपनी क़ब्रो से बाहर निकलते हैं
और
हर दिन की समाधि पर
चढा देते हैं
भावना के कुछ सडे हुए फूल
जला देते हैं
इच्छाओ के कुछ तेल-हीन दीपक !
फिर ये ज़िन्दा मुर्दे
अपनी क़ब्रो मे लौट जाते है।

●

दो लघु कविताए

•

१ उस दिन

उस दिन
उन खामोश पहरो मे
सडक के दोनो किनारो पर खड
दो आम पेडो को
एक दूसरे के गले मे वाहे डाले
आलिगन-बद्ध देखा
तो मैने महसूस किया
कि वे मै और तुम थे ।

२ वह सध्या

उस उदास सध्या के समय
पहाडो मे घिरे हुए
मैने तुम्हे आवाज़ दी ।
मेरी आवाज
पहाडो से सिर फोडकर लौट आयी ।
मेरी आवाज का उत्तर
मेरी ही आवाज थी ।

•

तुम्हारे द्वारा बुना हुआ स्वेटर

•

आज तुमने स्वेटर बुनकर
जिस मुस्कान के साथ
उसे मुझे समर्पित किया,
तुम्हारी कसम !
म अभी भी
उस मुस्कान की सकरी घाटी मे भटक रहा हू ।

तुमने यह क्यो पूछा—
'कैसा बना है स्वेटर ?'

क्या मर लिए
इतना ही काफी नही ह
कि इसे तुमने बुना ह,
और इसके माध्यम स
तुम्हारी पतली उगलिया
मेरे तन मन का
स्पर्श कर रही ह ?

•

दो लघु कविताए

•

१ उस दिन

उस दिन
उन-खामोश पहरो मे
सडक के दोनो किनारो पर खडे
दो ज़वान पेडो को
एक दूसरे के गले मे बाह डाले
आलिगन-बद्ध देखा
तो मैने महसूस किया
कि ये मै और तुम थे।

२ वह सध्या

उस उदास सध्या के समय
पहाडो मे घिरे हुए
मैने तुम्हे आवाज़ दी।
मेरी आवाज़
पत्थरो से सिर फोडकर लौट आयी।
मेरी आवाज़ का उत्तर
मेरी ही आवाज़ थी।

•

तुम्हारे द्वारा बुना हुआ स्वेटर

•

आज तुमने स्वेटर बुनकर
जिस मुस्कान के साथ
उसे मुझे समर्पित किया,
तुम्हारी कसम !
म अभी भी
उस मुस्कान की मकरी घाटी मे भटक रहा हूँ।

तुमने यह क्यो पूछा—
'कैसा बना है स्वेटर ?'

क्या मेर लिए
इतना ही काफी नही ह
कि इसे तुमने बुना ह,
और इसके माध्यम ने
तुम्हारी पतली उगलिया
मेरे तन मन का
स्पश कर रही हैं ?

•

सिगरेट बोलती है !

•

मैं एक सिगरेट हू !
मुझे पीते है लेखक, कवि या वियोगी,
आत्म-विस्मृति के लिए,
तन्मयता के लिए,
एकाकीपन के लिए !

मैं एक सिगरेट हू।
मुझे पीते है बाबू, लाला या अफसर–
शौक फरमाने के लिए,
रौब जमाने के लिए,
शान दिखाने के लिए।

लेकिन मुझे किसने पहचाना इनमे ?
मेरा व्यक्तित्व कितना विशाल है–
यह किसने जाना ?
कौन जानता है कि में जलती हू अपने आप मे
और मेरी आहो का धुआ
निकलता है पीने वालो के मुह से ?

मुझे किसी कवयित्री
की ये पक्तिया निरर्थक लगती है–
"तू जल जल जितना होता क्षय
वह समीप आता छलनामय !"
क्योकि जब मैं जल कर क्षय होती हू
तो कोई "छलनामय" मेरे समीप नही आता,
पीनेवाला फेक देता है मुझे सडक पर,
चौराहे पर,

और कुचल देता है मुझे
खुद ही अपने परो से !

मुझे अधरो पर सुलाने वालो !
मुझे चूमने वालो !
मेरा आलिंगन करनेवालो !
तुम्ही मुझे खत्म कर देते हो कश खीच खीच कर
जैसे खटमल चूसता है रक्त को !
दुनिया के लोगो !
तुम अधरो पर सुलाकर
पैरो से कुचलने की कला खूब जानते हो !

भला तुम मेरे व्यक्तित्व की महानता
क्यो समझोगे ?
तुम्हारे लिए तो मैं केवल सिगरेट हू !
केवल सिगरेट !!
!!!

•

सिगरेट बोलती है !

•

मैं एक सिगरेट हूं !
मुझे पीते हैं लेखक, कवि या वियोगी,
आत्म-विस्मृति के लिए,
तन्मयता के लिए,
एकाकीपन के लिए !

मैं एक सिगरेट हूं।
मुझे पीते हैं बाबू, लाला या अफसर—
शौक फरमाने के लिए,
रौब जमाने के लिए,
शान दिखाने के लिए।

लेकिन मुझे किसने पहचाना इतना ?
मेरा व्यक्तित्व कितना विशाल है—
यह किसने जाना ?
कौन जानता है कि मैं जलती हूं अपने आप में
और मेरी आहों का धुआं
निकलता है पीने वालों के मुंह से ?

मुझे किसी कवयित्री
की ये पंक्तियां निरर्थक लगती हैं—
'तू जल जल जितना होता क्षय
वह समीप आता छलनामय !''
क्योंकि जब मैं जल कर क्षय होती हूं
तो कोई 'छलनामय' मेरे समीप नहीं आता,
पीनेवाला फेंक देता है मुझे सड़क पर
[illegible] पर,

और कुचल देता है मुझे
[illegible] पैरों से !

[illegible] दि. ६/६२

मुझे अधरो पर सुलाने वालो !
मुझे चूमने वालो !
मेरा आलिंगन करनेवालो !
तुम्ही मुझे खत्म कर देते हो कश खीच खीच कर
जैसे खटमल चूसता है रक्त को !
दुनिया के लोगो !
तुम अधरो पर सुलाकर
पैरो से कुचलने की कला खूब जानते हो !

भला तुम मेरे व्यक्तित्व की महानता
क्यो समझोगे ?
तुम्हारे लिए तो मैं केवल सिगरेट हू !
केवल सिगरेट !!
!!!

●

रेखा-चित्र

•

नाइलन की साडी मे है सिमटा हुग्रा शरीर,
एडियो मे लचकते हुए बाटा के है सैडिल,
जुल्फो मे महकता हुग्रा टाटा का है शैम्पू,
होठो पर उभरती हुई लिपिस्टिक की है परते,
गालो पर उमडते हुए पाउडर के हे बादल,
नैनो से झाकती हुई सुरमे की है रेखा,
बडी मासूम है,
बडी कोमल है,
बडी नाज़ुक हे हसीना ।

बाये हाथ की कलाई पर है सोने की घडी,
हथेली मे लटकता है मोती-जडा मनीबेग,
दाहिने हाथ मे बजता हुग्रा ट्राजिस्टर रेडियो है,
उगली मे चमकती हे तीन सिहो की ग्रगूठी,
नाखूनो पर मचलती हुई पॉलिश की चमक है,
गल के हार मे हसता हुग्रा है श्वेत नगीना,
बडी मासूम है,
बडी कोमल है,
बडी नाज़ुक है हसीना ।

बडे नाज से, ग्रदाज से इसे पाला जाता है,
नाज़ुक बदन के लिए
विदेशो से नाज़ुक ग्रनाज मगाया जाता है,
चीनी का कही इससे बडे दूर का नाता है,
सब्जियो से इसका जी घबराता है,
दूध-मक्खन से यह डरती है,
चाय-कॉफी से इश्क करती है,
बिस्किट से पेट भरती है,
नमकीन प्लेटो पर मरती है,

थोडे से परिश्रम से इसे आता है पसीना,
बडी मासूम है,
बडी कोमल है,
बडी नाजुक है हसीना ।

इसके भीतर यदि झाको तो खोखला ढाँचा है,
आखो के भीतर गहरे डूबे हुए गड्ढे है,
जुल्फो के किनारो पर उगते है सफेद अकुर,
यो आती है हर वर्ष
भारत मे दीवाली !
यो आती है हर वर्ष
भारत मे दीवाली ।।

●

कौए और आदमी

•

जगल से गुजरते हुए
देखे मैंने तीन कौए–
तीनो मुझ पर आक्रमण करने के लिए
हवा मे पैतरे वदल रहे थे।

आक्रमण का कारण जानना चाहा मैंने।
पास था एक पेड,
पेड पर था घोमला,
घोसले मे होगे उनके शिशु–
मैंने सोचा और आश्वस्त हो गया।

तीन कौए क्यो ?–मैंने सोचा।
एक मादा होगी, दो होगे नर।
एक मादा !
दो नर !!
दोनो उन शिशुओ के दावेदार !
दोनो पहरेदार !!

मै परेशान हो गया।
मैंने इस स्थिति मे
आदमी को डालकर देखा,
तभी मेरे दिमाग मे गूज गयी गोलिया,
शरीर म ऐठ गयी एक हत्या,
हृदय पर चिपक गये खून के कुछ धब्बे।

•

तुमने देखे है ताजमहल !

•

तुमने समीपता ही पायी हर मजिल मे,
तुम क्या समझो बोझिल राहो की दूरी को !
तुमने देखे है ताजमहल जगमग करते,
तुम क्या समझो बिन-मोल बिकी मजदूरी को !

रगीन शमाओ ने तुमको दुलराया है,
तुमको बहलाया है फूलो ने, कलियो ने,
चचल चितवन ने चकित किया चचलता से,
तुमका भरमाया है रूमानी गलियो ने !

तुमने केवल आदर्शो के शुक पाठ किये,
तुमने यथार्थ के कडे घूट को पिया नही !
तुमने सहलाये कुतल शोख कल्पना के,
तुमने दिल के रिसते घावो को सिया नही !

तुमको जीवन से मिले छलकते पैमाने,
तुम क्या समझो आसू-भीगी मजबूरी को !

हर नये क्षितिज ने तुम्हे दिये उपहार नये
हर पगडडी को दीपित किया चादनी ने,
हर नयी मोड पर तुम्ह मिली मनुहार नयी,
हर चौराहे पर स्वागत किया रोशनी ने !

तुमने केवल बहते झरनो के गीत सुने,
सागर मे उठते-गिरते ज्वार नही देखे !
ह तुम्हे रिझाया घूघट डाल घटाओ ने,
तुमने बिजली के खर अगार नही देखे !

है तुम्हे मुबारक अथ हीन हर नयी सुबह,
तुम क्या समझो बेवश सध्या सिंदूरी को !

•

सरदी की रात का गीत

•

सरदी की यह सुनसान रात,
है सुन्न सडक,
भूखो के लटके मुखडो-सी
कुछ घास-फूस की झोपडिया
है आस-पास,
जो एक हवा के थप्पड को सह सके नही,
लगती है यो
परित्यक्त प्रियतमा हो निराश !

मिल के कल-पुर्जों
की ध्वनिया हैं गूँज रही,
बारह बजने की सुस्ती
दिखती गिरजाघर की आखो मे,
चिमनी गाती है गीत मशीनो
का मीठी झपकी लेकर,
भर रही उडाने ढलती रात
उदास हवा की पाखो मे ।

लडखडा रही है मौन रोशनी
लैम्प-पोस्ट की बाहो मे,
कुछ कुत्ते रह रह भौक रहे,
चमगादड पलके बिछा रहे है
नयी सुबह की राहो मे !

•

लम्बी कविताएं

स्थिति-बोध

•

है यदि हमने सम्बधो का अर्थ
। यह मत समझना ऐ दोस्त !
कि हम वहशी हो गये है ।
हमारे लिए उन सम्बधो मे
कोई अर्थ ही नही बचा था ।
यह तो हम
अतिरिक्त वजन ढो रहे थे,
इसे ढोने मे तुक ही क्या थी ?

मकडी के जाले-सा
ा हे पैसे का कुछ ऐसा फैलाव
कि सारे सम्बध उलझ गये हैं
महीन तन्तुओ मे !
उनके नगेपन पर
का लबादा डाल दिया गया हे,
ताकि खोखलापन ढँका रहे
और दिखावटीपन
जिन्दगी का नाम धरकर
एक-सी रफ्तार से चलता रहे !

इस बौनी दुनिया मे ऐ दोस्त !
जिसे प्यार किया जा सके,
सिवाय अपने अस्तित्व के,
ार करना हमारी मजबूरी है ?
हते है कि जिन्दा ह हम लोग,
क्योकि दिन अभी आता है,
और रात अभी ढलती है,

ईर्ष्या है हमे उन पूर्वजो से,
जो पालते रहे सपनो के ताजमहल,
रचते रहे आदर्शों के गढ ।
हमारी पीढी तो
स्वप्न-भग की उन गलियो से गुजर रही है,
जिधर झाकने का साहस
कोई मूल्य,
कोई आदश,
कोई गीत,
नही करता ।

ऐसे मे माफ करना मुझे ऐ दोस्त ।
अगर खो दिया है मैंने
पूनम का चाँद,
झरनो का सगीत,
हवाओ का अहसास
और समुद्रो का विस्तार ।
हमारी आखें और हमारे कान
रूप, नाद और शब्द
की परम्परा खो चुके है
और इस कदर परिचित हो गये हैं
भीतरी चीखो से
कि सब प्रकार के रूप, नाद और शब्द
हमे अनछुआ छोड जाते है ।

कट गयी है हमारी कविता
सयोग वियोग से
नख-शिख सौन्दय से,

विलेन के खजर पर टिका है
और विलेन खजर तेज कर रहा है।

इन सबके बाद भी ऐ दोस्त !
म नही हूँ दार्शनिको की उस पंक्ति मे
जो टूटन-ऊब-घुटन को
इतिहास की नियति मान बैठे हैं।
मै तो वह युयुत्सावादी हूँ,
जिसे जिन्दगी के विरुद्ध की जा रही
सारी साजिशो का पता है,
अस्तित्व के खिलाफ
बनाये जा रहे सारे लाक्षा गृहो की जानकारी है
और जो
शहीद सैनिको की परम्परा मे
किया जानेवाला पहला हस्ताक्षर है।

यह बात अलग है ऐ दोस्त !
कि खो दिया है मैंने
पूनम का चाद,
झरनो का सगीत,
हवाओ का अहसास,
समुद्रो का विस्तार
और कविता का रस।

•

विद्रूपता का अभिनय

•

तुम्हारा होली खेलने का निमत्रण
कितना निर्जीव !
कितना वेसुरा !!

इस वदरग अस्तित्व मे
कहा हैं इतने रग,
जितने पिचकारियो मे भर कर
तुम वहाना चाहते हो ?

वीमार आस्थाओ की
इस महानगरी मे
कहा है वह खुशहाल विपुलता,
जिसे मुट्ठिया भर भर कर
गुलाल की आधियो मे
तुम उडाना चाहते हो ?

कौडियो के मोल खरीदे जानेवाले
इन्सान के अस्तित्व मे
कहा है वह सगीत,
जिसे वासुरी व मृदग,
'डफ' और ढोलक की ताल पर
तुम विखेरना चाहते हो ?

इस पगु परिवेश के मुर्दा चेहरो मे
कहा है वह उन्माद, वह रौनक
जिन्हे तुम फाल्गुन के गीतो मे
गाना चाहते हो ?

वौने जनने वाली इस कुरूप सभ्यता मे
कहा है वह थिरकन, वह धडकन,

जिन्हें तुम नृत्य करते
पावों क घुघरुओं मे बाँधना चाहते हो ?

तुम्हारा होली खेलने का निमन्त्रण
कितना निर्जीव !
कितना बेसुरा !!

चाहते हो तुम
रिक्तता के मातमी प्रहरों को
हर्ष और उल्लास से भरना !
चाहते हो तुम
कोसों फैले रेगिस्तान मे
अमृत का झरना !!

जिन्दगी की तस्वीरें—
तुम और मै !
और हमारे ये प्रतिरूप !!
होली खेलना हमारे लिए
विद्रूपता का अभिनय होगा,
मेरे साथी !

हम एअर-कडीशन्ड कमरों मे सजे
सोफा-सेट नही है,
हम सगमरमरी दीवारों पर लटकते
गाधी और बुद्ध क तल-चित्र नही है,
हम मर्करी लाइट से प्रकाशित
गोदरेजी तिजोरिया नही है,
हम मखमली गद्दों को रौंदनेवाले
दिवा स्वप्न नही है !

हम तो है–
क्लर्क की व्यथा !
टाइपिस्ट की उंगलियो का श्रम !
गृहिणी की आखो का धुआँ !
बाल-विधवा के आसू !
लेखक की खरीदी गयी कलम !
श्रमिक के घर पर घूमती भूख !
कुली के डगमगाते कदम !

इतना बडा शून्य
और तुम्हारा होली खेलने का निमत्रण !
क्षमा दो साथी !
विद्रूपता का यह अभिनय
अब मुझसे नही हो सकेगा !

ये सूरतें,

ये शक्लें,

ये तस्वीरें !

○

मुझे इन सूरतों ने घेर लिया है !
मुझे इन शक्लों ने दबोच लिया है !
मुझे इन तस्वीरों ने गिरफ्त में ले लिया है !
    ये सूरतें !
    ये शक्लें !!
    ये तस्वीरें !!!

कागजों पर जब जब कलम दौड़ती है,
कल्पना के घोड़े
जब जब अपनी तेज रफ्तार से
जिन्दगी को पीछे छोड़ देते हैं,
तब तब ये सूरतें जन्म लेती हैं,
ये रेखाएं आकार ग्रहण करती हैं,
ये शक्लें ये सूरतें ये तस्वीरें
छटपटा कर पन्नों पर उतर आती हैं।

यह उदास, उदास
यह निराश सूरत किसकी है ?
यह बोझिल चाल
ये बिखरे बाल
ये फटे हाल
यह मेरा ग्वाला है !
महीने भर में दिये गये दूध का
हिसाब मांगता है।

यह अट्टहास, अट्टहास

यह मनहूस शक्ल किसकी है ?
यह मक्कार हसी
ये चचल आखे शरबती
यह बेईमान खुशी
यह मेरा महाजन है ।
शादी मे दिये गये ऋण का
भुगतान चाहता है ।

यह हताश, हताश
यह सिर पीटती तस्वीर किसकी है ?
यह हाथो मे सिर थामे
ये चेहरे पर झुकी शामे
ये थकी हुई जजर टागे
यह किराने का परचून दूकानदार है !
महीने भर उधार दिये गये सामान का
भुगतान मागता है ।

ये सूरते
ये शक्ले
ये तस्वीरे
मुझे घेर रही है !
मुझे दबोच रही हे !!
मुझे गिरफ्त मे ले रही हैं !!!
और सूरतें !
और शक्ले !!
और तस्वीरे !!!
एक के बाद एक
एक से अनेक

इन सबसे घिरी है मेरी सूरत
टूटते हुए सितारे-सी,
जाल में छटपटाते कबूतर-सी,
लगड़ाते हुए हरिण-सी ।

यह मासूम, मासूम
यह उतरी उतरी सूरत किसकी है ?
यह पुछी हुई चमक
ये नुचे हुए सपनो की दमक
यह हारे हुए जीवन की खनक
यह मेरी पत्नी है ।
बासी अरमान लिए
सड रहा है इसका दिल,
इसके दिमाग म चीख रही हैं
सपनो की भ्रूण हत्याए ।
इस सूरत पर
अतीत राख बनकर बिखर गया है,
इस देह मे
खोयी हुई सम्पत्ति की यादे
सुइयो की तरह चुभ रही हे ।
एक बार शिशुओ की तरह
यह खुशियो की पतग पकडने को
बेतहाशा दौडी थी
उन्मादिनी सी
पर इसके हौंसलो को,
इसके सकल्पो को,
इसके नजारो का
एक मध्यवर्गीय परिवार,

उसके चार बच्चों
और परम्पराओं ने मिलकर
चुपचाप पी लिया ।

ये निर्दोष, निर्दोष
ये अबोध शक्ल किसकी है ?
ये सहमी हुई आकृतियां
ये डरी हुई कलाकृतियां
ये जागी हुई नवीन स्मृतियां
ये दो बालिकाएं
सावन की घटा-सी,
ये दो बालक
नव-जन्मे गुलाब-से ।
ये शैतान कलाकार
ये मेरे बच्चे हैं !
इनके कमजोर जिस्मों को
कीमतें नोच रही हैं,
इनकी देह में
वर्तमान घुट रहा है,
इनकी आंखों से
घायल आशाएं झांक रही हैं,
इनके सामने
थका हुआ भविष्य
सिर झुकाये गुमसुम बैठा है !

यह कमजोर, कमजोर
यह चिड़चिड़ी तस्वीर किसकी है ?
यह कड़ुवाहट

यह बडबडाहट
यह लडखडाहट
यह मेरी मा है ।
इसने जिन्दगी को
बीमारी समझ कर ग्रहण किया,
विधि का विधान समझ कर जी लिया,
इसके सामने खडे होकर
भाग्य ने अनेक वार
इसकी हसी उडायी है ।
एक जमाने मे
यह तस्वीर भी बुलद थी,
पर इसकी बुलदी
कल्पनाओ के हिमालय से फिसलकर
चकनाचूर हो गयी ।
आज इसकी आत्मा मे
अनेक घाव रिस रहे है,
इसके अतीत मे
अनेक साप रेग रहे है,
इसके मन पर
क्षोभ का एक अशात बादल फैला हुआ है ।
यह तस्वीर
अपने अतिम कगारो पर खडी हुई
पिछले पचहत्तर कगारो पर
घृणा के साथ थूक रही है ।
इस तस्वीर का
अब एक ही विश्वास है
शून्य ! शून्य !! शून्य!!!

उफ
ये सूरते !
ये शक्ले !!
ये तस्वीरे !!!
और इस ससार मे फैले
इनके ये खौफनाक साये !
ये ददनाक अनुकृतिया !!
ये शर्मनाक परछाइया !!!
मुझे इन सायो ने घेर लिया है !
मुझे इस अनुकृतियो ने दबोच लिया है !!
मुझे इन परछाइयो ने गिरफ्त मे ले लिया है !!!
इन सबके बीच
घिरी है मेरी सूरत
खूटे से बधी गाय-सी,
हारे हुए सिपाही-सी,
टूटे हुए किनारे-सी ।

पर चित्र अभी एक और भी उभरा है
कुछ रेखाए करवट ले रही हैं,
शायद कोई और तस्वीर
जन्म लेने को व्याकुल है।

•

कुछ व्यग्य-कविताए

•

१ बिना पढ़े ही !

हमे टी० एस० एलियट मे
मसीहा दीखता है,
सात्र का अस्तित्ववाद
हमारे मस्तक मे है,
आल्बेयर कामू और अज्ञेय
हमारी बक बक मे है !

२ ईश्वर जाने क्यो !

हमे बीटनिको से प्यार है,
एलेन गिन्सबर्ग
हमारे गले का हार है,
जाज सगीत के हम भक्त है,
शेष से विरक्त है !

३ हमारा फैशन !

सिगरेट के गोलाकार छल्लो मे
आओ, लॉरेंस की चर्चा करें,
आदमी और औरत को
आवरणो से नगा करे,
"इन्सटिक्ट" की जिन्दगी को
श्रद्धाजलि अर्पित करे,
हमारा नारा –
"अश्लीलता शब्द
कोश से हटाया जाय !"

४ यह कल्पना ।
यह उदास शाम
मारिजुआना खाकर आयी है ।
(नोट –सुना है मारिजुआना
कोई मादक पदार्थ है ।)

५ यह अनास्था ।
विद्युत से जगमगाते
आलीशान कमरों में
होटलों व काफी-हाउसों में
हमारे सपनों की सांस
घुट रही है,
अनब्याही आस्था
लुट रही है
हम मृत्यु के पथिक हैं ।
हम मृत्यु के पथिक हैं ।।

६ 'अ' से हमारा स्नेह ।
गद्य में हम अगद्य हैं,
पद्य में हम अपद्य हैं,
कथा में हम अकथा हैं,
पाठकों के लिए व्यथा हैं,
(बुद्धि में हम अबुद्धि हैं,
अर्थ में हम अनर्थ हैं ।)

७ हमारा व्यक्तित्व ।
हमारे रक्त में
भूखी पीढ़ी,
दिगम्बर पीढ़ी,

तथा नगी पीढी
के कीटाणु रेंग रहे है,
वे हमारे
टेरेलिन के परिधानो के नीचे
सुरक्षित है ।

८ यह मसीहाई !

ओ लोगो !
मजूर है हमे
बिना शूली के क्रॉस किया जाना,
अब पडेगा तुम्हे
युग के यीशु के रूप मे हमे स्वीकारना !

९ यह अत मे एक वक्तव्य !

लिखते है वक्तव्य अत मे
देते खुद को स्वय बधाई,
(रघुकुल रीति सदा चलि आई)
कितनी है यह सरल जिन्दगी
कितनी है सस्ती कविताई,
अखबारो मे मिली छपाई,
(पाठक-गण के समझ न आयी !)
इसमे किसका दोष गुसाई ?
आलोचक ने लिखी सफाई,
कलम तोडकर लिखी दुहाई,
"जय जय भाई !
जय जय भाई !"

•

परम्परा और हम

•

यह सत्य है कि हमारे पूर्वजो ने
समय की धारा पर
अनेक कीर्तिवान जलयानो के
लगर स्थापित किये थे,
कि उन्होने अपने यौवन को
हिमालयी बुलदी दी थी,
कि उन्होने जीवन की पुस्तक मे
अनेक नये पृष्ठ जोडे थे,
कि वे अनेक
नये अध्यायो के कृतिकार थे।

यह सत्य है कि हमारे पूवजो ने
अपने पलो का
सगीत के धागो मे गूथा था,
कि उन्होने समय के पखो मे
उडानें भरी थी,
कि उन्होने रेत के ढेर पर
घरौदो की रचना की थी।
यह सत्य है,
नगा सत्य।

लेकिन यह सत्य नही
कि हमारे पूवज
हम से अधिक गतिवान,
बलवान
तथा ज्योतिष्मान् थे।

हमारे पूवजो ने
अपने पूवजो को

सीमाओ का विस्तार किया
आज हम
उनकी सीमाए विस्तार रहे है ।

हमारे पूवजो की चेतना मे
अपने पूवजो की
शताब्दिया वसी हुई थी,
आज हमारी चेतना में
हमारे पूवजो की
शताब्दिया वसी हुई है ।

हमारे पूवजो ने
प्रागैतिहासिक अनुभूतियो के खण्डहरो पर
अपनी अनुभूतियो के घर बनाये थ,
हम उनकी मध्यकालीन अनुभूतियो पर
आधुनिकता के प्रासादो की
रचना कर रहे है ।

वीहड जगल की पगडडियो पर
हमारे पूवजो के पद चिह्न
बैलगाडियो ने अकित किये,
उन बैलगाडियो के पद-चिह्नो पर
हमारी डी-लक्स वसे दौड रही है ।

हमारे पूवजो ने
आकाश के शून्य मे
नक्षत्रो की स्थापनाए की
आज हमारे अतरिक्ष यान
उन नक्षत्रो म

आदमी को स्थापित कर रहे हैं।

हमारे पूर्वजो ने
जितने क्षेत्रो की खोज की,
उन सभी क्षेत्रो मे
स्थापित कर रहे है हम
प्रकाश-स्तम्भ,
हमारे पूर्वजो द्वारा निर्मित
सभी दरवाजो पर
हमारी नयी सम्भावनाए
दे रही ह दस्तके।
इसलिए यह झूठ है
कि हम अपने प्रगतिशील पूर्वजो के
पिछुडे हुए उत्तराधिकारी ह,
हमारे लिए यह स्वीकृति होगी
हमारी आत्म हत्या,
जबकि हम साहस के साथ
जी रहे ह
और जीना जानते भी ह।

हर शताब्दी मे
एक नया सूरज चमकता है,
एक पुराना सूरज अस्त होता है।
आज हमारी शताब्दी का सूरज
अपनी दोपहरी प्रखरता के साथ
तप रहा हे
दहक रहा है,
—कल के सूरज की प्रतीक्षा मे

जो इससे अधिक
बलवान
और ज्योतिष्मान् होगा।

●

तुम्हारी याद मे

•

एक अजीब सूनेपन ने
मेरे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को
अपनी बाहुओं मे समेट लिया है।

कि आज इस मकान के
हर कोने मे
खामोशिया भटक रही हैं,
अपने परिचित स्थानो पर
एक लावारिस सन्नाटा
गरदन लटकाये ऊघ रहा है।

कि तुम्हारे सपनो मे सोयी हुई
मेरी चेतना
दूरियो को भी समीपता
समझने का भ्रम कर रही है।
आज यह स्पष्ट हो गया है कि
तुम्हारे बिना
में 'मै' नही हू।

पता नही इस दूरी ने
तुम्हारे मासूम मन को
परेशान किया या नही—
पर इन परेशानियो ने
मुझे तो बुरी तरह
परेशान कर डाला है।

•

मन आज गाने को बेचैन है।
गीतो की नदिया उमडे गी,

कविता के झरने बहेंगे।
यह 'तुम' ही तो हो
जिसे मैं अपने गीतों में गा रहा हूं।

बात जो लिखता हूं
ईमानदारी से लिखता हूं।
तुम्हारे और मेरे बीच
प्रवचनाओं और रहस्यों को
कोई स्थान नहीं,
क्योंकि मैंने कभी तुम से
अधूरा प्यार नहीं किया।

जो बात
अंतस्तल की गहराई से निकलती है
उसमें अलंकारों की क्या जरूरत है?
उपमाओं का क्या स्थान है?
छंदों का क्या अर्थ है?
तुम्हारे और मेरे बीच
कृत्रिमता का कोई पर्दा नहीं,
क्योंकि मैंने तुमसे
दिल से प्यार किया है,
दिमाग से नहीं।

•

तुम्हारी आंखों को शराबी क्यों कहूं?
तुम्हारे तन को गुलाबी कहना भी व्यर्थ है।
तुम्हारे सोने जैसे बालों को
रेशम की उपमा देते देते

मैं बहुत बहक चुका हू ।

अब मै तुम्हारे शरीर को दीपक न कहूगा ,
और तुम्हारे रूप को
दीपक मे प्रज्ज्वलित
दीप-शिखा भी नही समझू गा ।

यह सब झूठ है
कि तुम्हारे गालो और फूलो मे
कोई समानता है,
कि तुम्हारी आखो मे
किसी नीली झील की
झिलमिलाती परछाइया ह ।

मुझे अफसोस है कि अब तक
मैं तुम्हे झूठे शब्द-जाल मे
बाधता रहा, जकडता रहा ।
अब मैं यह समझ गया हूँ
कि तुम केवल 'तुम' हो
और तुम्हारी समानता
दुनिया की
किसी भी दूसरी वस्तु से नही !

भावनाओ की तरगो मे बहना
मेरे मन की दुबलता है !
मेरी एक कमजोरी यह भी है
कि मैं यह जानता हूँ
कि मेरी ये भावनाएँ
तुम्हारी समझ की शक्ति से परे हैं ।

लेकिन इन सबसे ऊपर है तुम्हारा प्यार।
तुम्हारी निष्कपट सरलता।
तुमने तो अपने
व्यक्तित्व को ही
मेरे व्यक्तित्व मे
समाहित कर दिया है।
इससे बढकर मै
तुम से क्या आशा रखता था ?
मेरी कलम की यह बकवास
समझने की तुम्हे क्या जरूरत है ?
तुम्हारा तो सारा अस्तित्व ही
मुझमे एकात्म होकर
सतह से बहुत नीचे
गहरा उतर आया है,
मेरी ये खोखली भावनाए तो
सतह के ऊपर शोर मचाती लहरे है।

●

मोह भग

•

मुझे याद है !
मुझे याद है ! !

तुमने मुझे सौपे थे
खिले हुए गुलाव,
और रगीन गुलदस्ते !
तुम्हारे चेहरे के चमकदार शीशे मे
देखी थी मैंने अपनी आकृति !
तुमने मुझमे खोजा था
कुछ सगीत भरा सपना,
और मैंने तुम्हारी आँखो मे
देखी थी अपनी परछाइया !

मुझे याद है !
मुझे याद है ! !

मेरे प्यार !
अब कहा चले गये
वे गुलाव,
वे गुलदस्ते,
वे शीशे ?
गुलावो की जगह गूगी खामोशी !
रगीन गुलदस्तो की जगह उदास विश्वास !
चमकदार शीशो की जगह चकनाचूर आदर्श !
मेरे प्यार,
अब तुम मुझे
ये क्या सौप रही हो ?

यह लुटा हुआ,
घुटा हुआ वतमान
तो तुम्हारा यथाथ नही था !

उस महकते हुए,
मस्ती मे वहकते हुए
अतीत को क्या हो गया ?
अब तो तुम्हे देख कर
भविष्य की कल्पना करने से ही
समूची आत्मा सिहर उठती है !
किसने की यथार्थ की यह नगी हत्या ?
कौन है इस प्रच्छन्न षड्यन्त्र का सूत्रधार ?
——मैं ?
या स्वय तुम ?
या यह पहरेदार व्यवस्था ?

मेरे प्राण !
आज तुम मेरे सामने
एक प्रश्न-चिह्न सी खडी हो,
तुम प्रश्न-चिह्न
अतीत पर !
वतमान !!
भविष्य पर !!!

तुम मेरे प्रणय की जिज्ञासा थी,
कैसे वन गयी तुम एक पहेली ?
क्या पता
तुम नीरवता की चीख मात्र रह जाओ !

मेरे प्यार !
अब मुझे लगाव नही है
तुम्हारे फूल-जडे जूडे से,
नीली झील सी आखो से,

रेशमी केश-राशि से,
गदरायी देह से,
मखमली अगडाइयो से,
गरमायी सासो से !
अब यह सब कुछ
तुम्हारे और मेरे बीच
कल्पना मात्र रह गया है !

जो कुछ यथार्थ बचा है,
वह है
एक कुरेदा हुआ सपना !
एक मसला हुआ गीत !
एक बासी अरमान !
एक फासी-लगी आत्मा !
एक गला-घोटा हुआ छन्द !
एक मुरझाया हुआ
लावारिस सगीत !

•

लेखनी के ज्वार भाटो को पुकार,
जिनके भीषण उद्घोषो से
अधेरो के साये पहरा छोडकर भाग जाय
फिर तुम अपने पतझडो का शृगार कर सको
और मै अपनी वीरानियो की जुल्फो मे
सितारे टाक सकू !

•

गम के समुद्र मे इस प्रकार
उतर जाने से क्या होगा ?
समुद्र मे डूबनेवालो ने
किसी भी मजिल का उद्धार नही किया !

तुम्हारे गम के समुद्र मे उतर जाने पर
आज़ादी के दीवाने
तोपो की भट्ठी मे भुनते रहेगे
वियतनाम मे सुहाग के बाग उजडते जायेंगे
नन्ही किलकारिया
मशीन गनो की बौछारो मे सोती रहगी
और पाठशालाए,
गिरजाघर,
डाक-घर,
तथा रेलवे स्टेशन
हवाई हमलो के पेटो मे घुसते जायेंगे।

मेरे साथी !
इस गम के कपट का पर्दा हटा
और अपने भीतर सोये हुए आदमी से कह
कि वह अपने होठो पर

पतझडो का शृंगार !

•

तू अपने पतझडो का शृङ्गार कर
और मुझे अपनी वीरानियो की जुल्फो मे
सितारे टाकने दे ।

खामोशियो को कम से कम
यू तो मत टेर
कि आसुओ के कारवा भटक जाय ।

मेरे साथी !
खामोशियो ने आज तक
किसी भी समस्या का हल नही खोजा,
शून्यता ने आज तक
किसी भी जिन्दगी के दद को नही बदला,
किसी भी बोझ को नही बाटा ।

मेरे बन्धु !
हृदय की वीणा पर
अपनी अगुलियो का यू प्रहार कर
कि रोम रोम मे ध्वनिया बिखर जाय,
लय की नदी मे नहाकर
शब्दो को इतने ऊचे स्वरो मे आवाज दे
कि दूर वादियो मे भटकती
बहारे लौट आय
और तेरे देश मे आकर
रोशनी का रथ थम जाय ।

मेरे साथी !
यदि पुकारना है
तो गीतो के भूकम्पो को पुकार,
कविताओ के लावा को पुकार,

लेखनी के ज्वार भाटो को पुकार,
जिनके भीषण उद्घोषो से
अधेरो के साये पहरा छोड़कर भाग जाय
फिर तुम अपने पतझडो का शृगार कर सको
और मैं अपनी वीरानियो की जुल्फो मे
सितारे टाक सकू !

•

गम के समुद्र मे इस प्रकार
उतर जाने से क्या होगा ?
समुद्र मे डूबनेवालो ने
किसी भी मजिल का उद्धार नही किया !

तुम्हारे गम के समुद्र मे उतर जाने पर
आजादी के दीवाने
तोपो की भट्ठी मे भुनते रहगे
वियतनाम मे सुहाग के वाग उजडते जायेगे
नन्ही किलकारिया
मशीन गनो की बौछारो मे सोती रहेगी
और पाठशालाए,
गिरजाघर,
डाक-घर,
तथा रेलवे स्टेशन
हवाई हमलो के पेटो मे घुसते जायेगे ।

मेरे साथी !
इस गम के कपट का पर्दा हटा
और अपने भीतर सोये हुए आदमी से कह
कि वह अपने होठो पर

घृणा और लिप्सा के विरोध मे
इन्कलाब के नारे बुलाये,
जिनके भीषण उद्घोषो से
निहत्थो पर वार करने वाले
हथियारो को लकवा मार जाय !
और अधेरो के साये पहरा छोड कर भाग जाय।

फिर तुम अपने पतझडो का श्रृगार कर सको,
और मैं अपनी वीरानियो की जुल्फो मे
सितारे टाक सकू।

●

तपस्वियो की तरह
हाथ पर हाथ धरकर,
पालथी मारकर, समाधि लगाकर,
"ओ३म् शाति, ओ३म् शाति" के—
पाठ करने से क्या होगा ?

शाति और तपस्या का अर्थ
केवल आदमी समझते है !

मेरे बधु !
तेरी अणु-बम न बनाने की
शाति प्रतिज्ञा का गला
चीन का पचशील दबाता जा रहा है,
तेरी विश्व-बन्धुत्व की तपस्या को
ताशकद-समझौता मिटाता जा रहा है,
और दूर सरहदो पर
नयी बनी बैरको तथा खाइयो से

गोली की धीमी आवाज़ साफ सुनायी दे रही है,
ओट मे छिपी तोपो के मुखो से
अभी अभी भरे बारूद की सडाध
हवा मे मडरा रही है,
और कुछ वायुयान
हमारे आकाश को मापने की तैयारी मे
तेल पीते जा रहे है ।

मेरे साथी !
ताशकद-समझौता हो या पचशील—
दोस्ती हो सकती है इन्सानो से,
हैवानियत का
इलाज केवल एक है—
—खून
मौत
और विजय !

ताकि तू अपने पतझडा का शृगार कर सके
और मै अपनी वीरानियो की ज़ुल्फो म
सितारे टाक सकू !

•

अकर्मण्यता की चादर मे सिमट कर
यू जिन्दगी काट लेने से क्या होगा ?

उदास चेहरो ने
कही भी वीरानो मे फूल नही सजाये,
झुके हुए मस्तको ने
किसी भी अपमान के कलक को नही धोया !

मेरे वधु !
तेरे उदासी मे इस प्रकार घुटते रहने से
तेरे ही घर मे डाके पडते रहगे,
भूख की चुडैल
तेरे भाई-बहिनो की जवानियो को
निगलती रहेगी,
फसलो का सौंदय
गोदामो की काल-कोठरियो म सडता रहेगा,
देश की अनेक सिसकियो पर
दो-चार मुस्काने बिखरती रहगी,
और सरकारी मेजा पर पडे एकत्र आकडे
सस्कृत नाटको क
विदूषको का सफल अभिनय करते हुए
खोखली, बनावटी, और
भूठी हसी हसते रहगे !

मेरे साथी !
मेर वन्धु !
अगर तुम्हे
अपने पतझडो का शृ गार करना है—
अगर मुझे अपनी वीरानियो की जुल्फा मे
सितारो को टाकना है—
तो हमे एक शक्तिशाली मोर्चा बनाना होगा
जिससे
अजगरो के घेरा म बद पडे फूल
आजाद हो सकेंगे
खोई हुई आखो मे
काजल चमक सकेगा,

सूने मस्तक पर
बिन्दी सवर सकेगी,
लुटी हुईं मुस्कानो का
उद्धार हो मकेगा,
लडखडाती हुईं आस्थाओ तक
नयी सुवह की रोशनी पहुच सकेगी,
और रावण के रथो मे जकडी हुई
साधनाओ की सीताए
मुक्त हो सकेंगी।

और सबसे वडी वात--
मेरे वन्धु !
मेरे साथी !
तेरे पतझडो का शृंगार हो सकेगा,
और मेरी वीरानियो की जुल्फो मे
सितारे टक सकेंगे।

•

पराजितो का वक्तव्य

हम अजर है, अमर है, अजेय है,
क्योकि हम किसी से सघर्ष ही नही करते।

हम इस खूबसूरत विश्व के
रचयिता की सराहना करते है,
तथा हमारे खुदा ने
जो हसीन जिन्दगी
हम जीने के लिए दी है
उसके लिए हम उसके प्रति कृतज्ञ है।

"विप्लव', 'अमन',
'क्राति', 'परिवर्तन',
तथा 'बगावत'—
ये परिभाषाए आतकवादियो की है,
जिन्हे हम बहुत ही हीन दृष्टि से देखते है।
हमारा पूर्ण विश्वास
हर स्थिति के वर्तमान रहने मे है।
इस वर्तमान जिन्दगी के लिए
हम अपने खुदा का लाख शुक्र करते हे
और कसम खाते हे
कि हर नाजुक समय मे
हम इस जिन्दगी को जियेगे,
जहर और अमृत के घूटो को
सहज भाव से पियेगे।
हम इस खूबसूरत जिन्दगी को
सवारेंगे, दुलारेगे
तथा इसे निष्काम भाव से जियेगे।

हम समदर्शी सत हैं,

गांधी और विनोबा के भक्त हैं,
गौतम और महावीर के अनुयायी हैं,
सुकरात और मीरा के राही हैं।

नेपोलियन और भगतसिंह
सुभाष और क्रॉमवेल
लेनिन और लुमुम्बा
के नामों से भी परिचित हैं।
उनके संघर्षों की दार्शनिक व्याख्या में
घंटों भाषण दे सकते हैं,
पर उन जैसी खून-खराबी
हम कर भी तो कैसे सकते हैं!

दिन में हम अधीर हैं,
दिमाग से हम वीर हैं,
स्वभाव हमारा गम्भीर है।
मारने हम मीर हैं— (बातों में)!
सत्ता-सम्पन्न पत्थरों की भी
चरण-कमलों की वन्दना करते हैं,
हम न तो किसी को डराते हैं
और न हम किसी से डरते हैं।
केवल बात के धनी हैं,
शब्दों के शहंशाह हैं,
बातों में ही मारते हैं,
बातों में ही मरते हैं।
साधना से हम दूर हैं,
पर प्रथम पंक्ति में रहने को ही
दिल तथा दिमाग से मजबूर हैं।

जिसके लिए
हम नित नयी योजनाएं बनाते है,
इस हसीन ज़िन्दगी के
गीत गुनगुनाते है।
सत्ता के मन्दिरो मे
दीपक जलाते है,
तथा प्रभुओ से वरदान पाने के
सपने सजाते हैं।

हमे न ज़माने से कुछ गिला है,
न कोई वक्त का ही कुसूर है!
जो कुछ खुदा ने दे दिया है,
वह सब हमे मंज़ूर है,
वह सब हमे मंज़ूर है!

ओ हमारे आका!
ओ हमारे मालिक!
बस इतना वरदान दे दे
कि हमारा अस्तित्व बना रहे
और हम तेरे द्वारा दी हुई
इस हसीन जिन्दगी को जीते रहे।
हम इसे प्यार करने की कसम खाते है,
इसकी पूजा करने की कसम खाते है,
इसे न बदलने की कसम खाते है।

बादल बरसें, ओले गिरें,
ज्वालामुखी फटें, पहाड़ गिरें,
बिजलियां तड़कें, धरती फटे
भूकम्प आए या आकाश गिरे—

हम कभी भी विचलित न होगे।
हम कभी भी चिंतित न होगे।

ये सब तो खुदा के दूत हैं,
जगत मे जीव के लिए
माया के बधन हैं।
इन सबका स्वागत है!
विवाह-शादियो की तरह
इन सबका स्वागत है!

हम हर स्थिति मे,
हर स्थान पर
भारतीय सस्कृति के गीत गायेंगे,
रामायण और महाभारत का
शुक-पाठ करेंगे
तथा गीता के अट्ठारह अध्यायो को
मशीन की तरह रटते जायेंगे।

हमे इस हसीन जिन्दगी से प्यार है,
हम इस खूबसूरत जिन्दगी से प्यार है,
ओ हमारे प्रभु!
ओ हमारे आका
तुझे शत शत नमस्कार है!
तुझे शत शत नमस्कार है!!

आत्म-हत्या पर्याय नारी

•

आत्म-हत्या और नारी
दो समान-धर्मी पर्याय है
मेरे इस देश भारत मे ।
आत्म-हत्या बनाम नारी,
नारी पर्याय आत्म-हत्या ।

नारी,
जिसे गगा सी
पवित्र बताया जाता है
मेरे इस देश भारत मे,
नारी,
जिसका सतीत्व
हिमालय से ऊचा बताया जाता है
मेरे इस देश भारत मे ।

आत्म-हत्या बनाम गगा ।
आत्म-हत्या पर्याय हिमालय ।
आत्म-हत्याओ के माध्यम है—
स्टोव और चूल्हे,
कुए और नदिया,
ट्रेन और बसे ।

मेरा यह देश भारत,
गगा का पुजारी ।
हिमालय का बेटा ।
आत्म हत्या को
सही अर्थ मे नही स्वीकारता,
क्योकि आत्म हत्या का
सही अर्थ है नारी,

नारी का सही अर्थ है गगा,
नारी के दूसरे पर्याय हैं
सीता, राधा, सावित्री,
इसलिए मेरा यह देश भारत
आत्म-हत्या को
'दुघटना' कहता है !

स्टोव मे जलना
एक दुर्घटना !
कुए मे कूदना
एक दुघटना !
ट्रेन से कटना
एक दुघटना !
नदी मे डूबना
एक दुघटना
नारी का पर्याय
एक दुघटना !

फिर कथाए पढी जाती है,
सुनती ह परम्पराए,
हाथो मे मालाए घुमाती हुई,
परम्पराए
जो आत्म-हत्याओ की माए है ।

कथाए होती हे
सीता के प्रेम की अनन्यता पर
सीता
जो आज भी स्टोव मे जल जल कर
अग्नि-परीक्षा दे रही है !

कथाए होती है
राधा की अनुरक्ति पर,
राधा,
जिसे आज ही उसके घरवाले ने
कालिदी मे डूब मरने के लिए
घर से निकाल दिया है।

कथाए होती है
सावित्री के सतीत्व पर
सावित्री,
जो आज भी
किसी तेज स्पीड से भागती हुई
ट्रेन से कटकर
अपने सत्यवान् को खोजने
यम-लोक पहुच रही है।

आत्म हत्या
पर्याय नारी।
नारी
पर्याय आत्म हत्या।

•

ओ मेरे उखडते हुए विश्वास !

•

ओ मेरे उखडते हुए विश्वास !
ओ अपनी धुरी से छूटते हुए नक्षत्र !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा,
अधूरी बात वाकी है,
अधेरी रात वाकी है !

नत-मस्तक ह अनेक
अधखिली आशाए,
सजल नयन लिए
रास्तो पर विछी हे
अध-पकी आस्थाए,

कितनी प्यासी सुवहो की
अध-मुदी पलके
प्रतीक्षा मे पथरा रही ह,
कितने गगनचुम्बी सपनो की
अध-मरी प्रेतात्माए
पाताल मे मडरा रही है ।

ओ मेरे उखडते हुए विश्वास !
ओ मेरे ढलते हुए सूरज !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा,
अधूरी बात वाकी है,
अधेरी रात वाकी है !

ओ मेरे उखडते हुए विश्वास !
क्या तू यो ही

कथाए होती है
राधा की अनुरक्ति पर,
राधा,
जिसे आज ही उसके घरवाले ने
कालिदी मे डूब मरने के लिए
घर से निकाल दिया है ।

कथाए होती है
सावित्री के सतीत्व पर
सावित्री,
जो आज भी
किसी तेज स्पीड से भागती हुई
ट्रेन से कटकर
अपने सत्यवान् को खोजने
यम-लोक पहुच रही है ।

आत्म हत्या
पर्याय नारी ।
नारी
पर्याय आत्म हत्या ।

●

कथाए होती है
राधा की अनुरक्ति पर,
राधा,
जिसे आज ही उसके घरवाले ने
कालिंदी मे डूब मरने के लिए
घर से निकाल दिया है ।

कथाए होती है
सावित्री के सतीत्व पर
सावित्री,
जो आज भी
किसी तेज स्पीड से भागती हुई
ट्रेन से कटकर
अपने सत्यवान् को खोजने
यम लोक पहुच रही है ।

आत्म हत्या
पर्याय नारी ।
नारी
पर्याय आत्म हत्या ।

●

इच्छाओ को वर्फ वनने देगा ?
प्यार के गीतो को सद वनने देगा ?
रगीन वहारो को ज़र्द वनने देगा ?

क्या तू यो ही
वच्चो के होठो पर हसी को सूखने दगा ?
इन्सानियत के वागो मे गीदडो को भूकने देगा ?
वसतो की लाशो पर गिद्धो को घूमने देगा ?
ओ मेरे उखडते हुए विश्वास,
ओ मेरे राख वनते हुए ज्वालामुखी !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा,
अधूरी वात वाकी है ।
अधेरी रात वाकी है !

०

ओ मेरे उखडत हुए विश्वास !
क्या तू सिसकिया सुन सुन कर भी
यह समझता रहेगा
कि तुमने कुछ नही सुना ?
क्या तू अस्मतो को विकता देखकर भी
यह सोचता रहेगा
कि तुमने कुछ नहीं देखा ?
क्या तू पराजय को हर सन्दर्भ से जुडा पाकर भी
यह मानता रहेगा
कि हमारा पराजय से कोई रिश्ता नही ?

क्या तू किरणो को कालिख लगने दगा ?
क्या तू चार अधेरा का

रोशनी को ठगने देगा ?

आखिर कितनी बार
आत्म-प्रवचनाओ को गले लगायेगा ?
आखिर कितनी वार
दिन के सफेद प्रकाश मे
दूध-धोये सत्यो को झुठलायेगा ?
आखिर कितनी वार
इन कायर गलतफहमियो को
दुलारेगा, दुहरायेगा ?

ओ मेरे उखडते हुए विश्वास !
ओ मेरे भाटा वनते हुए ज्वार !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा,
अधूरी वात वाकी है !
अधेरी रात वाकी है !

●

ओ मेरे उखडते हुए विश्वास !

मेरे देश की दम-तोडती
वहारो ने पुकारा है,
अधेरी गुफाओ मे भटकती
रोशनी ने पुकारा है ।

उधर सापो की फौजो ने
मासूम कलियो को घेरा है,
इधर हर नये वने कानून पर
दौलत का पहरा है,

मेरे इस देश के हर साधु मे
एक शैतान का चेहरा है।

हर सुवह के पीछे पडी हुई
एक वेशरम दोपहर है,
कि जिसका अत साझ है,
आज हर नयी फसल
धान को जन्म देने के वाद भी
वाझ है।

ओ मेरे उखडते हुए विश्वास!
ओ मेरे थके हुए वादल!
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा,
अधूरी वात वाकी है,
अधेरी रात वाकी है!

•

ओ मेरे उखडते हुए विश्वास!

मेरे इस देश मे
हर वेईमान निगाह
ईमानदारी का चश्मा चढाये है,
मंजिल तक जाने वाली हर राह
शर्म से सिर झुकाये है,
हर देवता के शीश पर
एक दैत्य अब आसन लगाये है!
आज हर नारा वदनाम हो गया है,
हर कोलाहल का अर्थ खो गया है,
यह वूढा समय

अनेक झूठे वायदों को ढो गया है।
ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
ओ मेरे सिमटते हुए चांद !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा,
अधूरी बात बाकी है,
अंधेरी रात बाकी है,
अभी तू रुक !
अभी तू थम !

●

अंतिम पृष्ठ

अशब्द आभार

- जीवत कवि, स्वतंत्र-चेता समीक्षक तथा 'माध्यम' के यशस्वी सम्पादक बालकृष्ण राव के प्रति प्रारम्भ के लिए।

- कवि और गीतकार रामनरेश सोनी के प्रति आवरण-पृष्ठ और स्वरूप के लिए।

ामदेव आचार्य

जून, १९३४

एम ए [अंग्रेजी साहित्य]

अंग्रेजी विभाग,
डूगर कालिज,
बीकानेर (राजस्थान) मे।

मुख्य रूप से,
कविता और समीक्षात्मक लेख
यदा कदा कहानिया भी।

कविता कहानी के कुछ सकलनो
के अतिरिक्त माध्यम, 'ज्ञानोदय',
'बिन्दु', अणिमा', 'आजकल',
'वातायन', 'धारा, 'गल्प भारती,
युयुत्सा' आदि मे रचनाए
प्रकाशित।

विद्रोह प्रथम कृति [स्वतत्र रूप से]

आगामी प्रकाशन

ान साहित्य के ज्वलत प्रश्नो पर
ात्मक लेख निर्भीक व तटस्थ दृष्टि।